❍ 17 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *मुख से व कर्मेन्द्रियो से कोई पाप कर्म तो नहीं किया ?*

➢➢ *सर्विस में कभी थके तो नहीं ?*

➢➢ *प्रवृति में रहते लोकिकता से न्यारे रह प्रभु का प्यार प्राप्त किया ?*

➢➢ *सदा खजानों से संतुष्ट और संपन्न रहे ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अपने को शरीर के बंधन से न्यारा बनाने के लिए अवतार समझो। अवतार हूँ, इस स्मृति में रह शरीर का आधार ले कर्म करो।* कर्म के बंधन में नहीं बंधो। देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव करो।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं बाबा के साथ रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को बाप के साथ रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? *सदा साथ रहने वाले वा कभी-कभी साथ रहने वाले? क्या समझते हो? जब बाप का साथ छूटता है तो और कोई साथी बनते हैं? माया तो साथी बनती है ना!* कितने जन्म माया के साथी रहे? बहुत रहे ना। और बाप का साथ प्रैक्टिकल में कितने समय का है? संगमयुग है ना और संगमयुग है भी सबसे छोटा युग। तो क्या करना चाहिये? सदा होना चाहिये।

〰✧ क्योंकि सारे कल्प में कितना भी पुरुषार्थ करो तो भी साथ का अनुभव कर सकेंगे? (नहीं) तो इसका स्लोगन क्या है? (अभी नहीं तो कभी नहीं) यह याद रहता है? समय का भी महत्व याद रहे और स्वयं का भी महत्व याद रहे। दोनों महत्व वाले हैं ना! *इस संगमयुग के समय को, जीवन को-दोनों को हीरे तुल्य कहा जाता है। हीरे का मूल्य कितना होता है! तो इतना महत्व जानते हुए एक सेकण्ड भी संगमयुग के साथ को छोड़ना नहीं है। सेकण्ड गया, तो सेकण्ड नहीं लेकिन बहुत कुछ गया।* ऐसी स्मृति रहती है?

〰✧ *सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का समय अब है। अगर सीजन पर सीजन को महत्व नहीं देते तो सदा के लिये वंचित रह जाते हैं। तो इस समय का महत्व है, जमा करने का समय है। अगर राज्य अधिकारी भी बनते हो तो भी अभी के जमा के हिसाब से और पूज्य भी बनते हो तो इस समय के जमा के हिसाब से। एक छोटे से जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध जमा करना है।*

ये याद रहता है कि कभी-कभी? सम टाइम है? तो ये सम टाइम शब्द कब खत्म करेंगे? समाप्ति समारोह कब मनायेंगे? रावण को भी मारने के बाद जलाकर खत्म कर देते हैं? तो अभी मारा है, जलाया नहीं है!

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ विस्मृति तो हो नहीं सकती, याद रहती है। लेकिन *सदा शक्तिशाली याद स्वत: रहे उसके लिए यह लिंक तूटना नहीं चाहिए।* हर समय बुद्धि में याद का लिंक जूट रहे - उसकी विधि यह है। यह भी आवश्यक समझो जैसे वह काम समझते हो कि आवश्यक है यह प्लैन पूरा करके ही उठना है। इसलिए समय भी देते हो, एनर्जी भी लगाते हो।

〰✧ वैसे यह भी आवश्यक है, इनको पीछे नहीं करो कि *यह काम पहले पूरा करके फिर याद कर लेंगे। नहीं।* इसका समय अपने प्रोग्राम में पहले ऐड करो। जैसे सेवा के प्लैन किये दो घण्टे का टाइम निकाल फिक्स करते हो - चाहे मीटिंग करते हो, चाहे प्रेक्टिकल करते हो, तो दो घण्टे के साथ-साथ यह भी बीच-बीच में करना ही है - यह ऐड करो।

〰✧ जो एक घण्टे में प्लैन बनायेंगे, वह आधा घण्टे में हो जायेगा। करके

देखो। आपे ही फ्रेशनेस से दो बजे आँख खुलती है, वह दूसरी बात है। लेकिन कार्य के कारण जागना पडता है तो उसका इफैक्ट (प्रभाव) शरीर पर आता है। इसलिए *बैलेन्स के ऊपर सदा अटेन्शन रखो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सबसे विशेष कहने में भल एक शब्द 'देह-अभिमान' है। लेकिन देह-अभिमान का विस्तार बहुत है। एक है मोटे रूप में देह-अभिमान, जो कई बच्चों में नहीं भी है। *चाहे स्वयं की देह, चाहे औरों की देह, अगर औरों की देह का भी आकर्षण है तो वह भी देह-अभिमान है। कई बच्चे इस मोटे रूप में पास थे।* मोटे रूप से देह के आकार में लगाव व अभिमान नहीं है। *परन्तु इसके साथ-साथ देह के सम्बन्ध से अपनी संस्कार विशेष कोई शक्ति विशेष है, उसका अभिमान अर्थात् अहंकार, नशा, रोब यह सूक्ष्म देह-अभिमान है।* अगर इन सूक्ष्म देह-अभिमान में से कोई भी अभिमान है तो न आकारी फरिश्ता नैचुरल बन सकते, न निराकारी बन सकते। क्योंकि आकारी फरिश्ते में भी देह-भान नहीं है, डबल लाइट है। *देह-अहंकार निराकारी बनने नहीं देता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कौड़ी से हीरे जैसा बनने के लिए, बाप को याद करना*"

➳ _ ➳ मीठे बाबा के कमरे में बेठी हुई मै आत्मा... अपने प्यारे बाबा को बड़ी ही प्यार से निहार रही हूँ... कि बाबा ने अपने सच्चे प्यार की चमक से... *मेरे दुखो में हो गए, धुंधले जीवन को, कितना प्यारा और चमकदार बना दिया है..*. आज मीठे बाबा के प्यार में... मेरा हर संकल्प दिव्यता से सजा हुआ... पूरे विश्व में दिव्य तरंगो को बिखेर रहा है... मै आत्मा *कितनी तेजस्वी मणि बनकर, गुणो से दमक रही हूँ.*.. भगवान को पिता, टीचर, और सतगुरु रूप में पाने वाली मै कितने महान भाग्य से सजी हुई हूँ... और यूँ यादो में डूबी मै आत्मा... मीठे बाबा के गले लग जाती हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान वर्षा में भिगोते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *इस वरदानी संगम में मीठे बाबा का प्यारा साथ आपके भाग्य ने दिलाया है..*. इसलिए श्रीमत के साये में पावन बनकर, सतयुगी दुनिया में हीरो बनकर मुस्कराओ... इस वरदानी संगम में हर पल हर साँस मीठे बाबा की गहरी यादो में डूब जाओ... और असीम सुखो से भर जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को पाकर खुशियो में खिलकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे लाडले बाबा... *मै आत्मा तो सदा आपके दीदारो की ही प्यासी थी... कब सोचा था कि यूँ भगवान बैठ तराशेगा और मुझे हीरे जैसा चमकाएगा.*..

प्यारे बाबा आपकी श्रीमत की छत्रछाया में मै आत्मा दिव्य और पूज्य बनती जा रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सतयुगी दुनिया का मालिक बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *ईश्वर पिता के सच्चे प्यार की तरंगो में, गुणो और शक्तियो की खान बनकर... मीठे सुखो से अपना दामन भरो.*.. इस कीमती समय पर तीव्र पुरुषार्थी बनकर... सब कुछ प्यारे बाबा का अपने नाम करा लो... मीठे बाबा की यादो में सदा खोकर, हर पल को सफल करलो...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के सारे खजाने और रत्न अपनी झोली में समेटकर कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे प्यारे बाबा... *देह के भान में आकर, विकारो से भर चली मुझ आत्मा धूल को उठाकर, आपने अपने मस्तक पर सजा लिया है..*. मुझे अपने कन्धों पर बिठाकर मेरा प्यारा भाग्य जगा दिया है... मै आत्मा आपके प्यार की शक्ति में हीरे जेसी जगमगा रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी फूलो सी गोद में बिठाकर मुझे शक्तिशाली बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... मीठे बाबा के इस प्यारे साथ का हाथ पाकर, अपनी खोयी चमक और तेज से फिर से सज जाओ... विकारो से परे हो, दिव्यता भरे जीवन से, अपने आत्मिक गुणो में शान से मुस्कराओ... *सबको प्रेम और सुख की तरंगो से भरकर, इस विश्व धरा को मीठे सुखो की बगिया बनाओ..*.

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे बाबा के मुझ आत्मा पर किये उपकारों का हर पल शुक्रिया करते हुए कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे साथी बाबा... *आपने मेरा भाग्य कितना प्यारा बना दिया है... मुझे अपने प्यार में कौड़ी से हीरे जैसा बना दिया है..*. मै आत्मा हर साँस से आपकी मीठी, प्यारी यादो में खोयी हुई हूँ... और दिव्य गुण और शक्तियो को पाकर सम्पूर्ण पावनता से निखर गयी हूँ..."मीठे बाबा के प्यार में पावन बनकर मै आत्मा... अपने साकारी वतन में आ गयी...

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- घर घर में रूहानी हॉस्पिटल खोल सबको याद की दवाई देनी है*"

➳ _ ➳ अपने मन बुद्धि को सभी बाहरी बातों से डिटैच कर, मन मे चल रहे संकल्पो पर ध्यान केंद्रित करते हुए, धीरे धीरे उन संकल्पो को नियंत्रित कर, अपनी आंखों को हल्के - हल्के बन्द कर मैं एकदम रिलैक्स हो कर बैठ जाती हूँ। इसी शांतमय स्थिति में कुछ देर बैठे - बैठे अनेक प्रकार के दृश्य मेरी आँखों के सामने आने लगते हैं। *मैं देख रही हूँ सारी दुनिया के मनुष्यों को जिनके चेहरों पर खुशी की एक झलक भी दिखाई नही दे रही। ऐसा लग रहा है जैसे सारी दुनिया अंदर ही अंदर गहन पीड़ा का अनुभव कर रही है*। अब मैं देख रही हूँ उन सभी मनुष्यों के मस्तक पर विराजमान उनकी आत्मा को जो विकारों के चंगुल में फंस कर बीमार हो गई है इसलिए मनुष्य मुस्कराना ही भूल गए हैं।

➳ _ ➳ अपने आत्मा भाईयों की यह दुर्दशा देख कर मुझे बाबा के महावाक्य स्मृति में आने लगते है। ऐसे लगता है जैसे बाबा निर्देश दे रहें हैं, *बच्चे:- "रूहानी सर्जन बन बीमार रूहों का ईलाज करो"। आज हर आत्मा 5 विकारों की बीमारी से पीड़ित हैं इसलिए सभी मानसिक रोगी बन गए है। उन रोगी आत्माओं को निरोगी बनाने के लिए घर - घर मे रूहानी हॉस्पिटल खोल सबको याद की दवाई दे कर उन्हें तन्दरुस्त बनाने की सेवा करो*। अपने उन आत्मा भाइयों को याद की दवाई खिला कर स्वस्थ बनाने के लिए अब मैं स्वयं को परमात्म बल से भरपूर करने के लिए अशरीरी स्थिति में स्थित होती हूँ और सेकण्ड में साकारी देह से बाहर निकल कर ऊपर की ओर चल पड़ती हूँ। आकाश

के पार, सूक्ष्म वतन के भी पार अब मैं स्वयं को परमधाम में अपने मीठे प्यारे शिव बाबा के सानिध्य में स्पष्ट देख रही हूं।

➳ _ ➳ बाबा अपनी सर्वशक्तियों से मुझे भरपूर कर रहे है। *ऐसा लग रहा है जैसे अपनी समस्त ऊर्जा का भंडार बाबा मेरे अंदर समाहित कर रहे हैं ताकि संपूर्ण ऊर्जावान बन मैं विश्व की समस्त आत्माओं को, जो विकारों की अग्नि में जलने के कारण आज रोगी बन गई है, उन्हें परमात्म याद की दवाई दे कर, उन्हें बलशाली बना कर उन विकारों से मुक्त होने का बल उनमें भर सकूँ*। परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, ऊर्जावान बन अब मैं परमधाम से नीचे आ रही हूँ। सूक्ष्म वतन में पहुंच कर, अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर को धारण कर अब मैं बापदादा के साथ कम्बाइंड हो कर साकार लोक में आ जाती हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा के साथ साकारी दुनिया का भ्रमण करते हुए अब मैं फ़रिशता बाबा से आ रही सर्वशक्तियों को स्वयं में भर कर इन शक्तियों को पूरी दुनिया मे फैला रहा हूँ। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में जल रही आत्माओं पर ये शक्तियां शीतल फुहारों के रूप में बरस रही हैं। इन शीतल फुहारों के उन पर पड़ने से विकारों की अग्नि बुझ रही है और उन्हें शीतलता का अनुभव करवा रही है। *शांति का अनुभव करके वो आत्मायें तृप्त हो रही हैं। शीतलता की अनुभूति करवाने के साथ - साथ अब मैं फ़रिशता उन आत्माओं को परमात्म याद की दवाई दे कर उन्हें सदा के लिए विकारों के चंगुल से छूटने का उपाय बता रहा हूँ*।

➳ _ ➳ परमात्म याद की दवाई खा कर सभी निरोगी आत्मायें अब स्वस्थ हो रही हैं। उनके चेहरों की मुस्कराहट वापिस लौट आई है। हर आत्मा का चेहरा रूहानियत से चमकने लगा है। *इस ईश्वरीय ज्ञान के महत्व को अब हर आत्मा स्वीकार कर रही है। घर - घर मे रूहानी हॉस्पिटल खुल रहें हैं। याद की दवाई खा कर सभी आत्मायें बलशाली बन अब अपने सम्बन्ध संपर्क में आने वाली आत्माओं को भी अपने रूहानी हॉस्पिटल में दाखिल कर उन्हें भी हर रोज

परमात्म याद की दवाई खिलाकर एवर हेल्दी बना रही हैं*।

➳ _ ➳ घर घर मे रूहानी हॉस्पिटल खोलने के बाबा के फरमान का पालन कर अब मैं अपने फ़रिशता स्वरूप से ब्राह्मण स्वरूप में लौट आती हूँ । *मैं देख रही हूँ कि अब हर मनुष्य आत्मा जो विकारों के कारण रोगी बन गई थी, चमक हीन हो गई थी वो अब याद की दवाई खा कर फिर से निरोगी, चमकदार बन रही है*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं प्रवृति में रहते लौकिकता से न्यारे रह प्रभु का प्यार प्राप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं लगावमुक्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न हूँ ।*
✺ *मैं सदा संतुष्ट आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा परिस्थितियों के आते ही उन्हें बदल देती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आप लोग यह नहीं सोचना कि हम लौकिक काम क्यों करें! यह तो आपकी सेवा का साधन है। *लौकिक कार्य नहीं करते हो लेकिन अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए लौकिक कार्य करते हो।* जहाँ भी जाते हो वहाँ सेन्टर खोलने का उमंग रहता है ना। तो लौकिक कार्य कब तक करेंगे-यह नहीं सोचो। *लौकिक कार्य अलौकिक कार्य निमित्त करते हो तो आप सरेन्डर हो।* लौकिकपन नहीं हो, अलौकिकपन है तो लौकिक कार्य में भी समर्पण हो।लौकिक कार्य को छोड़कर समर्पण समारोह मनाना है - यह बात नहीं है। ऐसा करने से वृद्धि कैसे होगी! इसीलिए निमित्त बनते हो, तो जो निमित्त लौकिक समझते हैं और रहते अलौकिकता में हैं, ऐसी आत्माओं को डबल क्या, पदम मुबारक है। समझा। इसीलिए यह नहीं कहना-दादी हमको छुड़ाओ, हमको छुड़ाओ। नहीं, और ही डबल प्रालब्ध बना रहे हो।

➳ _ ➳ हाँ आवश्यकता अगर समझेंगे तो आपेही छुड़ायेंगे, आपको क्या है! जिम्मेवार दादियां हैं, *आप अपने लौकिकता में अलौकिकता लाओ।* थको नहीं। लौकिक काम करके थक कर आते हैं तो कहते हैं क्या करें! नहीं खुशी-खुशी में दोनों निभाओ क्योंकि देखा गया है कि डबल विदेशी आत्माओं में दोनों तरफ कार्य करने की शक्ति है। तो अपनी शक्ति को कार्य में लगाओ। कब छोड़ेंगे, क्या होगा.... *यह बाप और जो दादियां निमित्त हैं उनके ऊपर छोड़ दो, आप नहीं सोचो।* कौन-कौन हैं जो लौकिक कार्य भी करते हैं और सेन्टर भी सम्भालते हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप निश्चिंत रहो। नम्बर आप लोगों को वैसे ही मिलेंगे, जो सारा दिन करते हैं उन्हों जितना ही मिलेगा।

सिर्फ ट्रस्टी होकर करना, मैं-पन में नहीं आना। मैं इतना काम करती हूँ, मैं-पन नहीं। करावनहार करा रहा है। मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ। पावर के आधार पर चल रही हूँ।

✺ *ड्रिल :- "अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए ट्रस्टी होकर लौकिक कार्य करने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *सुबह की ठंडी-ठंडी हवाओं में, उगते सुरज की सुनहरी रोशनी की पनाहों में, मैं कमल पुष्प समान आत्मा बगीचे में बैठ, मीठे बाबा की मीठी-मीठी यादों में विचरण कर रही हूँ...* मैं रुहे गुलाब आत्मा अपनी रूहानी खुशबू फैलाती, सुख-शांति की किरणों से इस प्रकृति को सजाती, *बाबा की यादों की लहरों में समा जाती हूँ...* खो जाती हूँ अपने शिव पिता की यादों में... तभी मुझ आत्मा की नजर सामने वाले वृक्ष पर पड़ती है... जिसमें गहरे नीले रंग की एक चिडिय़ा अपने घौंसले में बैठे बच्चों के मुख में दाना डाल रही है... उन्हें उड़ना सिखा रही है... इस दृश्य को देख मुझ आत्मा के मानस पटल पर पर बाबा के कहे महावाक्य सामने आ रहे हैं... बच्चे *गृहस्थ व्यवहार में रहते न्यारे और प्यारे हो रहो... स्वयं को निमित समझ कर रहो...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा सामने चल रहे इस दृश्य को देख विचार करती हूँ... ये चिडिय़ा अपने बच्चों को सम्भालती है... उन्हें दाना देती है उड़ना सिखाती है... और एक दिन ये सभी अपने ही द्वारा बनाए गए, तिनका-तिनका इकठ्ठा कर तैयार किए घौंसले को छोड़ उड़ान भरते हैं अपनी-अपनी मंजिल की तरफ... कितने न्यारे होकर रहते है... अपने इस घौंसले में... मैं आत्मा मन-बुद्धि रूपी नेत्रों द्वारा सामने लौकिक घर को देखती हूँ... बाबा के कहें महावाक्य एक बार फिर मुझ आत्मा के मानस पटल पर आते हैं... बच्चे *ये आपका लौकिक घर नहीं बल्कि सेवास्थान है...* और फिर मैं आत्मा मन-बुद्धि रूपी नेत्रों द्वारा लौकिक कार्य क्षेत्र को देखती हूँ... इसे देखते ही मुझ आत्मा को बाबा के महावाक्य याद आते हैं... बच्चे *यह तो आपकी सेवा का साधन हैं...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा सेवास्थान (लौकिक घर) के अन्दर प्रवेश करती हूँ... और एक संकल्प क्रिएट करती हूँ... *ये बाबा का घर है... ये सेवास्थान है... ये संकल्प क्रिएट करते ही बाबा से करंट मिलती है... और पूरे बाबा के इस घर में ईश्वरीय एनर्जी का फ्लो होना शुरु हो जाता है...* मैं आत्मा बापदादा की छत्रछाया की स्पष्ट अनुभूति कर रही हूँ... मुझ आत्मा में एक नयी उर्जा का संचार हो रहा है... अब *मैं आत्मा हर कार्य खुशी से बाबा की याद में कर रही हूँ...* इस स्पष्ट समृति के साथ की बाबा ने मुझे इस सेवा स्थान के निमित्त बनाया है... यहाँ अनेक आत्माओं के कल्याण अर्थ भेजा है... *इसी स्मृति द्वारा मैं आत्मा लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करने में सहज ही सफल हो रही हूँ...* हर कार्य मैं आत्मा निमित्त भाव से कर रही हूँ... ट्रस्टी भाव धारण कर हर कार्य करते मैं आत्मा बहुत हल्कापन महसूस कर रही हूँ... कोई बन्धन नहीं कोई बोझ नहीं... कमल पुष्प समान *मैं आत्मा न्यारी और प्यारी होकर हर कर्म कर रही हूँ...निमित मात्र हूँ बाबा का इंस्ट्रूमेंट हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा देख रही हूँ... स्वयं को कार्य क्षेत्र पर जहाँ मैं आत्मा हर कार्य खुशी से बाबा की याद में कर रही हूँ... इस स्पष्ट स्मृति के साथ की *ये लौकिक कार्य क्षेत्र अलौकिक सेवा का साधन हैं... मैं आत्मा हर पल बाबा के हाथ और साथ का सहज अनुभव कर रही हूँ...* ये कार्य मैं आत्मा इस भाव से कर रही हूँ कि ये बाबा ने मुझ आत्मा को सेवा दी हैं... बाबा ने मुझे निमित्त बनाया हैं... *मैं आत्मा करनहार हूँ और मेरा बाबा करावनहार है... बाबा की शक्ति मुझे चला रही है... ये स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ...* इससे मैं आत्मा सहज ही हर कार्य में सफलता प्राप्त कर रही हूँ... और *ये सेवास्थान भी अब अनेक आत्माओं के कल्याण अर्थ निमित्त बन गया है... मैं आत्मा देख रही हूँ कई आत्माओं को बाबा का सन्देश मिल रहा है... उनका कल्याण हो रहा है...*बाबा की अलौकिक सेवा में वृद्धि हो गयी है... जो आत्माएं यह ज्ञान सुन रही है वो भी लौकिकता को अलौकिकता में परिवर्तन कर हल्के हो चल रहे हैं... *वे भी बंधनमुक्त अवस्था का अनुभव कर रही हैं... और वे ट्रस्टी बन गए हैं... शुक्रिया मीठे बाबा शुक्रिया...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔